भा.कृ.अ.प. -केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Research Institute for Jute and Allied Fibers
Barrackpore, Kolkata-700120
Phone: 033-25356124 **Email**: director.crijaf@icar.gov.in
Website: http://www.crijaf.org.in

पटसन और समवर्गीय रेशों के कृषक समुदाय को कृषि-सलाह सेवाएं (15-21 अप्रैल, 2020)

I. जूट उगाने वाले राज्यों में अगले सप्ताह मौसम की संभावना

राज्य / कृषि संबंधी क्षेत्र / क्षेत्र	मौसम का पूर्वानुमान
पश्चिम बंगाल का गांगेय क्षेत्र (मुर्शिदाबाद, नदिया, हुगली, हावड़ा, उत्तर 24 परगना, पूर्व वर्धमान, पश्चिम वर्धमान, दक्षिण 24-परगना, बांकुरा, बीरभूम)	अगले 5 दिनों में बहुत ही कम या हल्की बारिश की संभावना है। अधिकतम तापमान 33-41 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 24-26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।
पश्चिम बंगाल के उप-हिमालयी क्षेत्र (कूचबिहार, अलीपुरद्वार, जलपाईगुड़ी, उत्तर दिनाजपुर, दक्षिण दिनाजपुर और मालदा)	अगले 5 दिनों में हल्की से भारी बारिश के आसार हैं। अधिकतम तापमान लगभग 27-33 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान लगभग 18-21 डिग्री सेल्सियस होने की संभावना है। मालदा में अधिकतम तापमान 34-38 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 24-25 डिग्री सेल्सियस होगा।
असम : मध्य ब्रह्मपुत्र घाटी क्षेत्र (मारीगाँव, नागांव)	हल्की से मध्यम बारिश (20 मिमी तक) / गरज के साथ थोड़ी बहुत बौछारें पड़ने की संभावना है। अधिकतम तापमान 24-34 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम तापमान 17-21 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।
असम : निचला ब्रह्मपुत्र घाटी क्षेत्र (गोआलपारा, धुबरी, कोकराझार, बंगाईगाँव, बारपेटा, नलबाड़ी, कामरूप, बक्सा, चिरांग)	भारी बारिश / गरज के साथ बौछारें पड़ने की संभावना है। अधिकतम तापमान 27-32 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम तापमान 17-21 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।
बिहार : कृषि जलवायु क्षेत्र II (उत्तरी पूर्व, (पूर्णिया, कटिहार, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया , अररिया , किशनगंज)	या तो बिल्कुल नहीं या फिर हल्की बारिश की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 31-38 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम तापमान 20-24 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।
ओडिशा : उत्तर पूर्वी तटीय मैदान (बालेश्वर, भद्रक, जाजपुर)	हल्की बारिश के आसार हैं। अधिकतम तापमान 35-39 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम तापमान 24-26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।
ओडिशा: उत्तर पूर्व और दक्षिण पूर्वी तटीय मैदान क्षेत्र: केंद्रपाड़ा, खुर्दा, जगतसिंघपुर, पूरी, नयागढ़, कटक और गंजम के हिस्से	बारिश का कोई अनुमान नहीं है। अधिकतम तापमान 33-37 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम तापमान 24-26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।

Source: IMD (https://mausam.imd.gov.in/) and weather.com

II. कृषि सलाह

1. उन किसानों ने जिन्होंने अभी तक बुवाई नहीं की है

उन्हें सबसे पहले अपनी भूमि को तैयार करने का सुझाव दिया जाता है और *नॉरवेस्टर* वर्षा का उपयोग करके तुरंत बुवाई कर दें ।

अच्छी उपज और गुणवत्ता वाले रेशे प्राप्त करने के लिए, पटसन की JRO 204 (सुरेन) किस्म का उपयोग करें और बुवाई से कम से कम 4 घंटे पहले बाविस्टिन 50 WP या कारबैंडाजिम (2 ग्राम प्रति किलो बीज) के साथ बीज का उपचार करना चाहिए।

बुआई क्रिजैफ मल्टी रो सीड ड्रिल मशीन के माध्यम से की जानी चाहिए जिसके लिए आवश्यक बीज कि मात्रा केवल 350 - 400 ग्राम / बीघा होगी। एक लाइन से दूसरी लाइन कि दूरी 20-25 सेमी और बुवाई की गहराई 3 सेमी रखें । बुवाई करने की आवश्यकता के समय सीड ड्रिल मशीन यदि अनुपलब्ध नाँ हो तो बीज को छिड़क कर बुवाई कर दें (अधिकतम बीज दर 6 किलोग्राम प्रति हेक्टर), लेकिन उसके बाद खेत में खरपतवार नियंत्रण के लिए अनिवार्य रूप से क्रिजैफ नेल वीडर का व्यवहार करना है ताकि इससे पंक्ति से पंक्ति तथा पौधे से पौधे की उचित दूरी बनी रहे। बुवाई के बाद पल्वीकरन(mulching) करने से यह मिट्टी की नमी के संरक्षण के लिए डस्ट मल्च के रूप में काम करेगा जो बीज के बेहतर अंकुरण के लिए भी अच्छा साबित होगा।

मध्यम और उच्च उर्वरता वाली भूमि के लिए, उर्वरक कि मात्रा N: P_2O5 : K2 O : : 60:30:30 किलोग्राम / हेक्टेयर निर्धारित की गयी है । कम उर्वरता वाली भूमि के लिए यह थोड़ी ज्यादा मतलब 80:40:40 किलोग्राम / हेक्टेयर होगी। नाइट्रोजन की पूरी मात्रा को 2-3 बार में भाग – भाग कर दिया जाता है, हालांकि फास्फोरस और पोटाश को शुरूआत मे ही पूरा दे दिया जाना चाहिए। किसान मिट्टी की जांच के अनुसार वास्तविक N: P : K की मात्रा निर्धारण के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड का भी उपयोग कर सकते हैं।

2. जो लोग पहले से ही बुवाई पूरी कर लिए हैं

उन्हें समग्र खरपतवार नियंत्रण और मिट्टी की नमी संरक्षण के लिए सिंचाई के साथ बुआई के 5 - 8 दिनों के बाद क्रिजैफ नेल वीडर का उपयोग करना चाहिए। इसी प्रकार, बाद के चरण में अंकुरण के 15 से 20 दिन बाद क्रिजैफ सिंगल व्हील वीडर का उपयोग करना चाहिए।

पटसन के बीज को खेत में छिड़कने के बाद, एक साथ खरपतवार नियंत्रण, पतलीकरण (thinning) और पंक्ति की उचित दूरी बनाए रखने के लिए, बुआई के 4 से 7 दिन बाद क्रिजैफ नेल वीडर उपयोग करें और इसको चलाते समय 10-10 सेमी. का अंतराल रखे । जूट की बुवाई के बाद जो खरपतवार निकलती है उसके नियंत्रण के लिए, क्विजालोफोप इथाइल @ 1.0 मिली / लीटर पानी में बुवाई के 8-10 दिन बाद और 1.5 मिली / लीटर बुवाई के 15 दिन बाद छिड़काव करें।

किसानों को इंडिगो कैटरपिलर कीट के आक्रमण से सतर्क रहने की सलाह दी जाती है, विशेष रूप से नए उभरे हुए रोपों में, जिनको ये कीट जमीनी सतह से काटता हैं। इसका संक्रमण बारिश या सिंचाई के बाद अधिक होता है । लार्वा पौधे के नीचे मिटटी के ढेलों में छिपे रहते है। इंडिगो कैटरपिलर के नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 EC @ 2 मिली° / लीटर का छिड़काव संध्या में किया जाना चाहिए । यदि समस्या बनी रहती है, तो इसे 8 - 10 दिनों के अंतराल पर दोहराएं।

3. **उस क्षेत्र में सिंचाई करने की प्रतीक्षा करें, जहाँ मध्यम वर्षा की भविष्यवाणी की गयी है** । अगर बुवाई के बाद सूखे की स्थिति बनी रहे तो पानी का छिड़काव कर सिंचाई करें । अतिरिक्त पौधों को हटाने (thinning) का कार्य 2 - 3 सप्ताह के अंदर कर ली जानी चाहिए। पतलीकरण(thinning) का कार्य होने के बाद, कम-से-कम एक बार नेल वीडर चलाकर पंक्तियों के बीच की खरपतवार को निकाल देनी चाहिए।

III. फसल अवस्थानुसार सलाह

एक बीघा जमीन के लिए, दोनों ही स्थिति में , छिड़काव के लिए 80 लीटर पानी की आवश्यकता होती है।

खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए बुवाई के 48 घंटे बाद, सिंचाई के साथ ही, प्रेटिलाक्लोर 50 ईसी @ 3 मिली° / लीटर पानी का छिड़काव करे दें या फिर ब्युटाक्लोर 50ईसी @ 4 मिली / लीटर पानी बुवाई के 48 घंटे बाद ही दें, लेकिन इसके लिए सिंचाई की जरूरत नहीं है।

पटसन की बुवाई के बाद जो खरपतवार निकलती है उसके नियंत्रण के लिए, क्विजालोफोप इथाइल (तारगा सुपर) @ 1.0 मिली / लीटर पानी में बुवाई के 8-10 दिन बाद और 1.5 मिली / लीटर बुवाई के 15 दिन बाद छिड़काव करें।

बुआई के 5 - 8 दिनों के बाद क्रिजैफ नेल वीडर और 21 दिनों बाद स्क्रैपर का का उपयोग करें

बाद के चरण में अंकुरण के 15 से 20 दिनों के बाद क्रिजैफ सिंगल व्हील वीडर का उपयोग करें ।

किसानों को इंडिगो कैटरपिलर के संक्रमण पर सतर्क रहने की सलाह दी जाती है, विशेष रूप से नए उभरे हुए रोपों में, जिनको ये कीट जमीनी सतह से काटता हैं। इसका संक्रमण बारिश या सिंचाई के बाद अधिक होता है । लार्वा पौधे के आधार में मिटटी के ढेलों में छिपे रहते है। इंडिगो कैटरपिलर के नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 मिली @ 2 मिली / ली का छिड़काव संध्या में किया जाना चाहिए । यदि समस्या बनी रहती है, तो इसे 8 - 10 दिनों के अंतराल पर दोहराए

IV . COVID-19 वायरस के प्रसार को रोकने के लिए सुरक्षा और निवारक उपाय

1. COVID-19 वायरस के प्रसार को रोकने के लिए किसानों को क्षेत्र संचालन की पूरी प्रक्रिया में हर कदम पर सामाजिक दूरी बनाना, साबुन से हाथ धोना, चेहरे पर नकाब पहनना, साफ सुतरे कपड़े पहनकर व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखना, इन सभी सुरक्षा उपायों का पालन करना है।

2. यदि संभव हो सके तो हाथ से बुवाई करने की बजाय क्रिजैफ सीड ड्रिल का उपयोग करें जहाँ भी संभव हो फील्ड ऑपरेशनों को कम से कम करें और एक ही दिन में बुवाई और भूमि की तैयारी के लिए अधिक संख्या में लोगों को न बुलाएँ ।

3. यदि मशीनों को किसान समूहों द्वारा साझा और उपयोग किया जाता है तो सभी मशीनों जैसे कि सीड ड्रिल, नेल वीडर, सिंचाई पंप, खेत जुताई उपकरण, ट्रैक्टर आदि की उचित स्वच्छता और सफाई बनाए रखें । मशीन के पुर्जों को भी बार-बार साबुन से धोएँ।

4. विश्राम के दौरान 3-4 फीट की सुरक्षित दूरी एक दूसरे से बनाए रखें, घर पर ही बीज उपचार, खाद और उर्वरकों की लोडिंग / अनलोडिंग ये सभी कम करें।

5. क्षेत्र की गतिविधि के दौरान किसी भी संदिग्ध या संभावित वाहक के प्रवेश से बचने के लिए ज्यादा से ज्यादा अपने परिवार के सदस्यों से ही काम लें ।

6. अपने जानने वाली दुकान से ही बीज इकट्ठा करें और बाजार से लौटने के बाद तुरंत अपने हाथ और शरीर के उजागर भागों को अच्छी तरह धोयें । बीज खरीदने के लिए बाजार जाते समय हमेशा फेस मास्क का प्रयोग करें।